OUR PUBLICATIONS

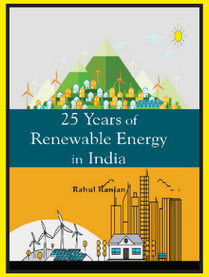

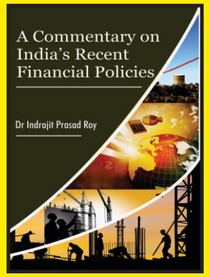

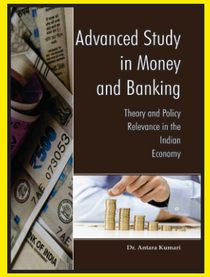

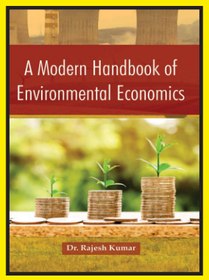

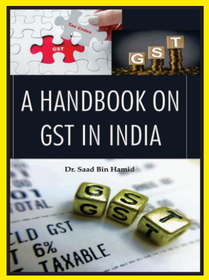

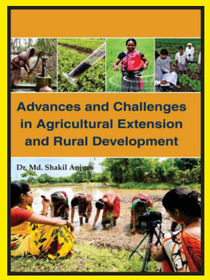

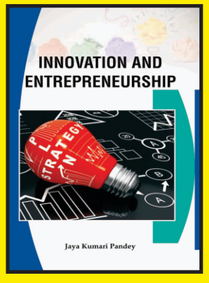

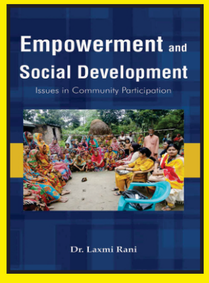

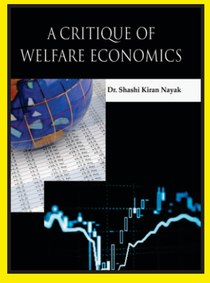

Jobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 5 सितंबर-अक्टूबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

IMPACT FACTOR : 5.051

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 12 **अंक** : 5 ❑ सितम्बर–अक्टूबर, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:
448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com
©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र के धार्मिक स्थलों का ऐतिहासिक अध्ययन: रामनगर के विशेष सन्दर्भ में–कु० सीमा; डॉ० नीरज रुवाली 1189
अनुसूचित जातियों में सामाजिक समावेशन की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन–राजेश कुमार 1192
सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता की समस्या: एक समाजशास्त्रीय विवेचना–आलोक कुमार श्रीवास्तव 1201
औपनिवेशिक काल में कम्पनी द्वारा किए गये भू-राजस्व सम्बन्धित कार्यो का मूल्यांकन–शरद यादव 1204
हिन्दी की समकालीन लम्बी कहानियां और उनका अर्थ सम्प्रेषण–रोली यादव; प्रो० देवेन्द्र नाथ सिंह 1208
न्यायिक दृष्टिकोण का मानव-केन्द्रिकतावाद से पारिस्थितिकी-केन्द्रिकतावाद की ओर संचलन: एक विश्लेषण–शिव सरन 1211
एम0एड0 व एम0ए0 शिक्षाशास्त्र के नेट/जे0आर0एफ0 विद्यार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–रवितोश कुमार सिंह; डॉ0 (श्रीमती) रेखा शुक्ला 1215
विद्यार्थियों के सांवेगिक परिपक्वता तथा राजनैतिक दक्षता में सम्बन्ध का अध्ययन–अतुल कुमार सिंह; डॉ0 आसिफ कमाल 1219

हिन्दी की समकालीन लम्बी कहानियां और उनका अर्थ सम्प्रेषण

रोली यादव

शोधार्थी, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

प्रो० देवेन्द्र नाथ सिंह

शोध निर्देशक एवं पूर्व आचार्य, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोध सारांश

हिन्दी की समकालीन लम्बी कहानियों का अर्थ कथानक के बाहर अपने समय और उसके सन्दर्भों से जुड़कर ही खुलता जाता है। इस अर्थ में हिन्दी की समकालीन लम्बी कहानियों में पाठ की अनन्त सम्भावना प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। उत्तर आधुनिक विचारकों ने साहित्य की इन्हीं विशेषताओं के कारण 'पाठ' को ज्यादा महत्वपूर्ण माना है।

कीवर्ड- अर्थ प्रक्षेपण, समकालीनता, उत्तर आधुनिकता, पाठ, विमर्श।

अपनी विकास यात्रा के वर्तमान दौर तक आते-आते आज कहानी बाहर और भीतर से बहुत ज्यादा बदल चुका है। वैसे तो प्रेमचन्द ने अपने जीवन के अन्तिम काल में ही घोषणा कर दी थी कि हमें ऐसे साहित्य की जरूरत नहीं जो हमारा मनोरंजन करे, बल्कि हमें जगाने वाले, बेचौन करने वाले साहित्य की आज जरूरत है। ऐसे में जब हम आज के कथा साहित्य का अध्ययन करते हैं तो अक्सर पाते हैं कि मामूली से लगने वाले कथानक के इर्द-गिर्द जीवन के मार्मिक या समाज की बनावट से सम्बन्धित गहरे प्रश्नों से अनुस्यूत है आज की कहानी। और यह एकदम से आकस्मिक नहीं है। प्रेमचन्द के तत्काल बाद ही जब भुवनेश्वर ने 'भेड़िए' कहानी लिखी तो निश्चित तौर पर वह आने वाले समय की सबसे प्रामाणिक कहानी थी। आज के समय में मनुष्य जिन क्रूर स्थितियों-परिस्थितियों का सामना करता हुआ निरन्तर अकेला होता जाता है यह उसी की पहली कहानी है। डॉ0 शुकदेव सिंह की टिप्पणी-''यह कहानी 'भेडिघ्ए' एक संज्ञा के नामिक रूपान्तरण की कहानी है। किस तरह जिन्दगी की निर्मम स्थितियां, जीने की कोशिश, और मौत का हादसा एक अच्छे खासे जवान पट्ठे को बूढ़े, बदहवास, खूंखार इन्सान में बदल देते हैं। किस तरह एक इफ्तखार खारू बना जाता है। इफ्तखार का 'खारू' के रूप में बदल जाने की नियति में एक लम्बा रेगिस्तान है।''[1] भेड़िए कहानी अपने समय से लगभग आधी शताब्दी आगे की कहानी है।

कहानी किस्सागो शैली में लिखी गयी है। आज जैसे उदय प्रकाश की कहानियों पर आरोप लगता है कि ये विदेशी प्रभाव की कहानी है। यही आरोप भुवनेश्वर की इस कहानी पर भी लगा था, लेकिन बात इतनी आसान नहीं है। इन कहानियों का महत्व कथानक की जमीन और सीधे-सादे यथार्थ पर नहीं है। इस तरह इन कहानियों को देखना या पढ़ना निहायत सरलीकरण होगा। भेड़ियों के झुण्ड से बचने की कोशिश में 'खारू' का अपने बाप के निर्देश पर एक-एक कर नटनियों को भेड़ियों के झुण्ड में फेंकते जाना, फिर बैल को भेड़ियों के हवाले कर देना और अन्त में अपने बाप को। यह आज के समय के यथार्थ को यथार्थवाद की प्रचलित और परम्परित अर्थों से भिन्न रास्ता अपनाते हुये उसे अभिव्यक्त करते जाना है। ज्ञानरंजन की कहानी 'पिता' काशीनाथ सिंह की कहानी 'अपना रास्ता लो बाबा, या रेहन पर रग्घू जैसी इधर लिखी गयी ढेरों लम्बी कहानियों का उत्स है। अभी थोडेघ दिन पहले की ही बात है। जब सोवियत रूस का विघटन नहीं हुआ था तब मनुष्यों की दुनिया, रिश्तों की दुनिया में ऐसा खौफनाक और अनुर्वरक रेगिस्तान नहीं था।'' जब हमसे अनेक लोग सपना देख रहे थे कि 'दूसरी दुनिया मुमकिन है', कुछ दूसरे लोग भी थे जो सपने देख रहे थे। और ये उनके सपने हैं। और हामरी दहशत, जो आज खौफनाक हद तक सच्चाई में तब्दील होने का है। पूंजीवाद की गैर जरूरी जंगों और इसके ताकतवर लालच ने धरती को खतरे में डाल दिया है और लोगों को दर-बदर कर दिया है।''[2]

उदय प्रकाश की कहानी 'तिरिछ' या 'और अन्त में प्रार्थना' इसी भाव संवेदना की काहनी है। 'तिरिछ' कहानी में कथानक महत्वपूर्ण नहीं है। इसलिये भी महत्वपूर्ण नहीं है कि यह कथानक केन्द्रित कहानी ही नहीं है। भय से भरे सपने के क्रमशः सच होने की कहानी है। इस कहानी को पढ़ते हुये जरूरी नहीं कि हम इसके अर्थ को उसके कथानक में खोजते रहें। जो कहानी के कथानक से बाहर हमारे रोजमर्रा के जीवन में तिल-तिल कर फैलता जा रहा है, उसी यथार्थ की कहानी है तिरिछ। यही कारण है कि ढेर सारे लोग-मास्टर नन्दलाल, बैंक के चपरासियों, चौकीदारों, पान की दुकान लगाने वाले बुन्नू, थाने के एस.एच.ओ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह आदि-आदि द्वारा टुकड़े-टुकड़े में दी गयी सूचनाओं से कथानक आगे बढ़ता जाता है। एक घटना का इतने सारे लोगों

द्वारा अलग-अलग पाठ और उसके भीतर से कहानी के सत्य, उसकी मार्मिकता का ओझल होते जाना ही इसका मूल मंतव्य है जैसा कि लेखक कहता है-''उनके साथ जो कुछ हो रहा है, वह वास्तविकता नहीं है। एक सपना है। पिताजी को ये सारी घटनाएं ऊल-जलूल-ऊटपटांग और बेमतबल लगी होंगी। वे इस सब पर अविश्वास करने लगे होंगे।.....वे तो गांव से शहर आये ही नहीं हैं, उन्हें किसी तिरिछ ने नहीं काटा है। बल्कि तिरिछ तो होता ही नहीं है.....वे उत्सुकता और बेचैनी से यह इन्तजार करते रहे हों कि जैसे ही वह किसी लड़के के सिर से टकरायेगा, उसका माथा नष्ट होगा और एक झटके में इस दु:स्वप्न के टुकड़े-टुकड़े बिखर जायेंगे और चारों ओर से वास्तविक संसार की बेतहासा रोशनी अन्दर आने लगेगी।''[3]

स्वप्न में यथार्थ और यथार्थ में स्वप्न की यह जो आवाजाही इस कहानी के शिल्प विन्यास में हैं, यूं ही नहीं है बल्कि अपने समय से भी ज्यादा गतिमान और भयावह हो चुका है। यही आज के उत्तर आधुनिक समय का क्रूरतम समय का यथार्थ है। किसानों की आत्महत्या पर शिवमूर्ति की लम्बी कहानी 'आखिरी छलांग' में भी इस यथार्थ और उसे अभिव्यक्त करने की कला, स्वप्नकथा के माध्यम से ही सम्भव हो पाती है। गांव का किसान जो सदियों से नितान्त स्थानीय जिन्दगी जीता चला आ रहा है, जिसकी जरूरतें, जिसकी भाषा, जिसकी संवेदना आदि सब कुछ निहायत ही स्थानीय और देशज रहा है वह देश के अलग-अलग प्रान्तों में कैसे एक ही रूप में प्रतिविंबित हो रहा है। किसानों की समस्या, उनकी आत्महत्याओं पर लिखी गयी यह एक बेहतरीन कहानी है। बेहद मार्मिक लेकिन 'तिरिया-चरित्तर' या 'तर्पण' वाले यथार्थ के दौर में शिवमूर्ति की इस कहानी को आलोचकों द्वारा वह महत्व नहीं मिला। किसी अन्य सन्दर्भ में नामवर सिंह ने लिखा है-''स्त्री विमर्श आरक्षण आदि मुद्दों के शोरगुल में इस सवाल के दब जाने की आशंका अधिक है। आज के शासनतन्त्र की दृष्टि में भी खेती और किसानों से जुड़े हुये सवाल हाशिए पर हैं। इसलिये कथाकारों का बड़ा हिस्सा इस ओर से उदासीन है।''[4]

इस बीच हिन्दी की समकालीन लम्बी कहानियों के केन्द्र में शहरी मध्यवर्ग, जो समय की गति में बहते हुये अपने को कहीं किसी ठोस जमीन से न जोड़ पाने के कारण रातों-रात उपभोक्ता वर्ग में तब्दील हो गया, उसी की कहानी है। इस महत्वपूर्ण सच्चाई के बावजूद सृंजय, महेश कटारे, चन्द्रमोहन प्रध ान, शिवमूर्ति, चन्द्रकिशोर जायसवाल जैसे कथाकारों ने उत्तर आधुनिकता के दौर में उसके प्रभावों दुष्प्रभावों को पकड़ते हुये गांवों की भी कहानियां लिखी हैं। इस दृष्टि से मैं मनोज कुमार पाण्डेय की एक बेहद महत्वपूर्ण काहनी 'पानी' का जिक्र जरूर करना चाहती हूं। इस अध्याय में जब मैं कहानियों के अर्थ सम्प्रेषण को अपने विचार का विषय बना रही हूं तब इस कहानी का महत्व मुझे बहुत दूर जाता दिख रहा है। देखा जाये तो ऊपर-ऊपर यह कहानी पर्यावरण की समस्या पर लिखी गयी कहानी प्रतीत हो रही है लेकिन इसे महज पर्यावरण की कहानी के रूप में पढ़ना इसके भीतर के वास्तविक मर्म से बहुत दूर रह जाने की एक अतिसीमित कोशिश होगी। यह गांवों के सामाजिक और सांस्कृतिक रूपान्तरण की कहानी है जैसे फणीश्वर नाथ रेणु का उपन्यास 'जुलूस' है। 'जुलूस' उपन्यास में जो तालेवर गोढ़ी का चरित्र है वैसा ही इस कहानी में आज जो बदलाव दिख रहा है उसका बहुत बड़ा कारण है गांव की परती जमीन पर फैले चरगाहों और तालाबों का खत्म हो जाना। गांवों के सामुदायिक जीवन की रीढ़ थे तालाब। गांव की संस्कृति के अलावा उसका भौतिक जीवन भी इन पर टिका रहता था। तालाब बाढ़ और अकाल दोनों से बचाते थे।

लेखक के शब्दों में-''तालाब भींटा और इसके बीच का मैदान किसी एक का नहीं था, समूचे गांव का था। बल्कि गांव के बाहर के लोगों का भी था। गर्मियों में लोग आते-जाते वहां किसी पेड़ की छाया में सुस्ता लेते। वहीं से बरसात में सबसे पहले मेढकों की आवाज आती। शादी ब्याह में वही तालाब पूजा जाता। औरतें वहीं तक बेटियों को विदा करने आतीं और असीसतीं कि इसी तालाब की तरह जीवन सुख से लबालब भरा हो।''[5]

मातबर भगन सिंह पैसे के बल पर तालाब को खत्म करते हैं और फिर प्राकृतिक संसाधन पर अपना आधिपत्य स्थापित करके पैसा कमाते हैं। इस बीच गांव की जो सामाजिक बनावट और बुनावट होती है, जातिगत और वर्गगत जितने भी अन्तर्विरोध होते हैं जब इस कहानी में खुलते जाते हैं। लेकिन यह कहानी सिर्फ जातियों के विभाजन और शोषण मात्र की कहानी नहीं है। जो इस कहानी से बाहर नर्मदा बचाओं आन्दोलन में शामिल हैं, जो जंगलों में नक्सलवादी कहकर मारे जा रहे हैं उन सबकी कहानी बन जाती है। एक तरह से कहा जाये तो मामूली सी दिखने वाली यह कहानी पूंजीवादी शोषण और मानव विरोध ी विकास और सभ्यता की कहानी बन जाती है। जैसा कि आलोचक संजीव कुमार लिखते हैं-''विभीषिकाओं के दौरान, जब जीने के संसाधन कम से कमतर होते जाते हैं। समाज के बहुरूपिया शक्ति सम्बन्ध उन संसाधनों की छीन-झपट में और भी सक्रिय, निर्णायक भूमिका निभाने लगते हैं। यह सजगता अगर कहानी में सिर्फ छत पर बसे बचे हुये लोगों के सन्दर्भ में नहीं, बल्कि पूरी कहानी में-नहीं है तो इसे कहानीकार की दृष्टि का 'ब्लाइंड स्पाट' ही कहना चाहिये।''[6]

इसी क्रम में सृंजय की कहानी 'कामरेड का कोट' और उदय प्रकाश की कहानी 'और अन्त में प्रार्थना' का जिक्र जरूर करना चाहूंगी। ये दोनों कहानियां अपनी बनावट और बुनावट में भिन्न कथा भूमि की कहानियां हैं। दोनों के किरदार 'कमलाकांत उपाध्याय' और 'डॉक्टर वाकणकर' एक दूसरे से पूर्णत: विरोध ी विचारधारा के किरदार हैं। कमलाकांत उपाध्याय जहां कम्यूनिस्ट पार्टी की वामपंथी विचारधारा के समर्पित कार्यकर्ता हैं वहीं 'और अन्त में प्रार्थना' के डॉक्टर वाकणकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की दक्षिणपंथी विचारधारा के प्रति आस्थावान और समर्पित कार्यकर्ता हैं। दोनों चरित्रों के मन में अपनी विचारधारा को लेकर यह गहरा आश्वासन है कि एक दिन जब उनकी विचारधारा एक राजनीतिक शक्ति बनकर सत्ता के केन्द्र में उपस्थित होगी तो जनता सुखी, सम्पन्न और खुशहाल होगी। डॉक्टर वाकणकर जिस राजनीतिक विचारधाराओं के प्रति समर्पित हैं वही एक दिन सत्ता में प्रतिष्ठित होती है। जाहिर है, इस बड़ी उम्मीद के पूरा होने के बाद वाकणकर की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रह जाता। इन दोनों कहानियों में ढेर सारे 'डिटेल्स' हैं, मैं उस डिटेल्स के चक्कर में यहां नहीं पड़ूंगी सिर्फ सत्ता के सत्य का उद्घाटन में इन दोनों कहानियों की समानता का जिक्र भर करूंगी। पहले 'कामरेड का कोट' कहानी का एक उद्धरण-''कामरेड सेक्रेटरी! आपकी नजर में मजदूरों की हत्या जरूरी मुद्दा नहीं है। आखिर यह मीटिंग किस लिये बुलायी गयी है..... इधर मेरे कुछ और साथियों के अपहरण की योजना बनायी जा रही है। फिर भी आज लोगों को यह जरूरी मुद्दा नहीं लगता।''[7]

कहानी में कमलाकांत उपाध्याय जिस राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ता हैं उसमें 'रक्तध्वज' उनके नेता हैं। सत्ता का तात्पर्य राजनीतिक सत्ता मात्र से न लेते हुये मैं संस्थानों की सत्ता को भी एक महत्वपूर्ण कारक मानती हूं। कमलाकांत और रक्तध्वज के भीतर जो अन्तर्विरोध दिखायी देता है उसे मैं एक छोटे कार्यकर्ता और उसकी पार्टी के शीर्ष को एक अलग सत्ता के अन्तर्विरोध के रूप में रखते हुये अपनी बात को स्पष्ट करना चाहती हूं। जाहिर है अपनी ही पार्टी के सत्तासीन होने पर वाकणकर की जो हत्या सत्ता के द्वारा की जाती है लगभग उसी स्थिति में कमलाकांत उपाध्याय भी पहुंचते प्रतीत होते हैं। इन दोनों कहानियों

से यह अर्थ निकलता है कि सत्ता की अपनी गति होती है। वह येन-केन-प्रकारेन अपने को बनाये रखना चाहती है अपने ही समर्पित कार्यकर्ताओं की बलि देकर भी। और भी आगे उस विचारधारा की भी बलि देकर जिसका सहारा लेकर वह सत्ता में प्रतिष्ठित होती है। इस दृष्टि से 'कामरेड का कोट' तथा 'और अन्त में प्रार्थना' सम्मिलित रूप से सत्ता के चरित्र को 'एक्सपोज' करती हुयी लगभग एक ही समय, एक ही कालखण्ड में थोड़ा आगे-पीछे लिखी गयी कहानियां हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी की समकालीन लम्बी कहानियां अपने कथानक से इतर दूर तक जाकर आधुनिक जीवन सन्दर्भों के नाना रूपों को खोलते, उजागर करते अपना अर्थ सम्प्रेषण करती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. दूधनाथ सिंह-भुवनेश्वर समग्र, पृष्ठ-41, राजकमल प्रकाशन-2012, प्रथम संस्करण
2. अरून्धति राय-आजादी, पृष्ठ-82, राजकमल प्रकाशन-2020, प्रथम संस्करण
3. उदय प्रकाश-तिरिछ, पृष्ठ-42-43, वाणी प्रकाशन-2010
4. नामवर सिंह-साहित्य की पहचान, पृष्ठ-220, राजकमल प्रकाशन-2015
5. मनोज कुमार पाण्डेय-पानी, हिन्दी समय डॉट कॉम
6. संजीव कुमार, हिन्दी कहानी की इक्कीसवीं सदी, पृष्ठ-60, राजकमल प्रकाशन-2019
7. सृंजय-कामरेड का कोट, पृष्ठ-129, राधा कृष्ण प्रकाशन-1993